—:शीर्षक:—

राजनांदगांव जिले मे ग्रामिण विकाश योजनाओ के क्रियान्वयन का विश्लेषणात्मक अध्ययन

(स्वर्ण जयंति ग्राम स्वरोजगार योजना के विशेष संदर्भ मे)

—:प्रस्तावना:—

छ. ग. राज्य जिसकी स्थापना 1 नवम्बर 2000 को हुई जिसमें बहुत सारे जिला बनाये गये है उन सभी के भौगोलिक स्थिति, धन संपदा, संसाधन, पर्यावरण, परिस्थिति जनसंख्या, विकास की आवश्यकताएं अलग—अलग है । उनमें से एक जिला राजनांदगांव जहां एक जिला पंचायत मे नौ जनपद पंचायत और उसके अंदर कई ग्राम पंचायत व गांव कस्बे आते हैं । इसमें 1. छुईखदान 2. खैरागढ 3. डोंगरगढ, 4. राजनांदगांव 5. छुरिया 6.डोंगरगांव, 7. चौकी, 8. मोहला 9. मानपुर 9 जनपद पंचायत शामिल किये जाते हैं ।

26 जनवरी 1973 को दुर्ग जिला को विभाजित कर राजनांदगांव जिला अस्तित्व में आया एवं 1998 को राजनांदगांव जिले से पृथक कवर्धा जिले का पुनगर्ठन हुआ है ।

यहां निवास करने वाली जनसंख्या अपना जीवन यापन हेतु गांवों में कृषि , पशुपालन , व्यवसाय, उद्योग, मजदूरी जैसे कार्य करके करते हैं । यहां का वातावरण अधिकतर ग्रामीण क्षेत्रों से जुडा हुआ है ।इस जनपद पंचायतों में विभिन्न ग्राम पंचायत आते है जहां शासन द्वारा अनेक प्रकार की योजनाएं चलाकर ग्रामवासियों को अनेक प्रकार की सुविधा मुहैया कराने का प्रयास किये जा रहे है ताकि समस्त राजनांदगांव वासियों को अपने अधिकारों के प्रति सजग किया जा सके तथा शासन द्वारा चलाये गये योजनाओं के अधिक से अधिक लाभ मिल सके और वे समानता से समाज में अपना जीवन यापन का स्तर सुधार सके ।

ऐसे लोग जो गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन कर रहे हैं दूरस्त ग्राम में, वन क्षेत्रों में निवास कर रहे हैं ,उनको भूमि, आवास, रोजगार ,जलवायु , विद्युत जैसी आधारभूत संबंधी समस्याओं के समाधान हेतु अनेक प्रकार की योजना चलाई जाती है जिससे उनकी इन समस्या का समाधान शासन द्वारा प्रयास करने पर हो सके ताकि विभिन्न संसाधनों से परिपूर्ण होते हुए भी जिले की प्रति व्यक्ति आय व आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने वाली परिस्थिति को सुधारा जा सके ।

ग्रामीणो कि समस्या का समाधान करने हेतु शासन द्वारा चलाये गये ग्रामीण विकास योजना निम्नलिखित है :–

1 स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना । 2 इंदिरा आवास योजना । 3 प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना 4 जलग्रहण क्षेत्र कार्यक्रम ।5 राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना । 6 नवा अंजोर योजना । 7 राष्ट्रीय सम विकास योजना । 8 भूमि सुधार योजना । 9 पंचायत से संबंधित योजनाएं ।

इन समस्त योजनाओ को शासन द्वारा संचालन जिले में किया जाता है।

स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार, योजना का प्रारंभ भारत सरकार ने अनेकों योजनाओं को स्थगित करके 1 अप्रैल 1999 में बनाई । वे अनेक स्थगित की हुई योजनाओं की सूची निम्नलिखित है :–

1. एकाकीक्रत ग्रामीण विकास योजना :– Integrated Rural Development Programme (IRDP)
2. स्वरोजगार हेतु ग्रामीण युवाओं का प्रशिक्षण :–Tranning of Rural youth and Self Employment (TRYSEM)
3. ग्रामीण क्षेत्रों में महिला एवं बाल विकास :–
   Development of Women and Childern Rural Area (DWCRA)
4. ग्रामीण शिल्पकारों को आधुनिक उपकरण की पूर्ति
   Supply of Improved Tool Kits Rural Artisans (SITRA)
5. गंगा कल्याण योजना
   Ganga Kalyan Yojana (GKY)
6. मिलयन वेल स्कीम
   Milion Well Scheme (MWS)

इस छः योजनाओं में अलग – अलग महिलाओं बच्चों विकलांग, बेरोजगारों को रोजगार देकर प्रशिक्षण देकर उन्हें ज्यादा से ज्यादा आय व सुनिश्चित आय प्रदान किया जाता था । केन्द्र सरकार ने 1 अप्रैल 1999 को इन सभी योजनाओं को समाप्त करके एक ऐसी योजना चलाई जिससे कि इन सभी छः योजनाओं की आपूर्ति की जा सके । इस योजना हेतु राष्ट्र व राज्य सरकार कोष का प्रबंध करती है 75 : 25 के अनुपात में किया जाता है । स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना का उद्देश्य व लक्ष्य ग्रामीण क्षेत्रों ने बड़ी संख्या में उद्योगों की स्थापना करना, रोजगार प्रदान करना है । सभी का उद्देश्य गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रहे परिवारों के गरीबी रेखा से उपर लाना है जो कि उनको एक निश्चित अवधि में निश्चित आय के द्वारा प्राप्त हो सके । सभी उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए ताकि ग्रामीण विकास हो सके।

–:उद्देश्यः–

महिला , अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, जन सामान्य व गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन कर रहे परिवारों को उनके अधिकारों व शासन द्वारा संचालित योजनाओ के प्रति सचेत करना ताकि वे योजना को समझे और उससे सुविधाएं प्राप्त करे जिससे जिले का समग्र विकास सुनिश्चित हो सके तथा स्वरोजगार के द्वारा उनकी आर्थिक स्थति मे सुघार हो।

–:परिकल्पना :–

शोध क्षेत्र का अध्ययन करने के दौरान यह प्रतीत होता है कि स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना के द्वारा अधिकतर राजनांदगांव ग्रामवासियों को उद्योग; व्यवसाय , कलाकृति आदि हेतु सहायता प्राप्त की है। शासन द्वारा चलाये जा रहे ग्रामीण विकास योजनाओं से जिला निंरतर प्रगति कर रहा है जिससे ग्रामीण विकास की दर 50 प्रतिशत 60 प्रतिशत तक की है और इससे ग्रामीण जन सामान्य की आर्थिक स्थिति में सुदृढ़ता आयी है तथा ग्रामीण क्षेत्रों में पूर्व की तुलना में सुधार हुये हैं ।

–:प्रस्तावित कार्य का शोध क्षेत्र मे योगदानः–

ग्रामीण जनसंख्या को अनेक सुविधा मुहैया करना तथा उनमे जागरुकता लाना ताकि वे ग्रामीण विकास हेतु चलाए जा रही योजना को समझे और उससे सुविधाएं प्राप्त करे । विकास के मापदण्ड से भारत में छ.ग. को अनेक धन संपदा व संसाधनों से परिपूर्ण होते हुए भी पिछडा माना जाता है क्योंकि यहां प्रति व्यक्ति आय कम होती है । स्वरोजगार के द्वारा प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि हेतु रोजगार के अवसर प्राप्त होना। महिला , अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति व गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन कर रहे परिवारों को सुविधा दिलवाने हेतु ताकि जिले का समग्र व विकास सुनिश्चित हो सके सभी जन सामान्य में आपस में समानता का भाव जाग्रत करने हेतु जन सामान्य को अपने अधिकारों व शासन द्वारा दी जा रही सुविधा के प्रति सचेत करना । सभी के अन्दर स्वास्थ्य, शिक्षा, आजीविका पोषण जैसे विषयों के प्रति जागरूकता लाने हेतु ।

–:शोध साहित्य का पुनरावलोकनः–

<u>*A report on the success and failure of SHG's in india; implementsand paradigmof success.* 2008 by Planning commission, govt.of india new delhi</u>

भारत सरकार के योजना आयोग ने अपने लेख मे लिखा है की स्वरोजगारीयो को ऋण उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार तथा उनकी कार्य क्षमता का आकलन करने के लिए 3 वर्ष तक की सीमा दी जाती है जिससे की वे गरीबरी से उबर सकें।
सूझाव के रुप में कहा गया है की प्रत्येक क्षेत्र के कुछ अधिकार दिये जाने चाहिए ताकी वे अधिकारो का प्रयोग करके गरीबी को कम कर सके।

<u>G. Bhaskara *Rao;Suggestions for Designing ofNational Rural Livelihood MissionA review of SGSY* 2009</u>

श्री भास्कर राव ने लेख मे कहा है की अनेक राज्यो में स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना ने उत्कृष्ट प्रदर्शन आर्थिक उन्नति के लिए किया है जिससे उपभोक्ता के साथ साथ बैंको तथा स्वसहायता समूहो का योगदान रहा।

<u>SGSY implementation in India: can eastern region match the southern region?**by B.C. Das**</u>

श्री दास ने भी लेख में लिखा है की योजना गरीबी को कम करने के लिए किया है जिसे दक्षिण क्षेत्र में बहुत विकास हुआ है और वहां इसका कियान्वयन वहां गरीबी मिटाने के लिए किया जा रहा है।

उपरोक्त लेखो में अध्ययन के क्षेत्र पर छोटे छोटे कार्य पूर्व में किये गये है जिसका अध्ययनरत विषय पर किये जा रहे शोध के कारणो पर प्रकाश डालने में अस्मर्थ है तथा विश्लेषण कि पर्याप्ता नही पायी जाती है।

—:शोध — प्रविधि:—

शोध कार्य करने के लिये आकड़ो का एकत्रिकरण करना आवश्यक होता हैं और उन आकड़ो को विश्लेषित करने के लिए उपयुक्त विधि की आवश्यकता है इस हेतू राजनांदगांव जिले मे ग्रामीण विकास योजनाओं के क्रियान्वयन का विश्लेषणात्मक अध्ययन स्वर्ण जयंति ग्राम स्वरोजगार योजना के विशेष संदर्भ मे विषय में अध्ययन करने के लिए आकड़ो का एकत्रिकरण करने हेतू प्राथमिक तथा द्वितियक समको का संग्रहण किया जाना है। प्राथमिक संमको को राजनांदगांव जिले में विभिन्न जनपद पंचायतो ,तहसिलो व गांवो को उनकी क्षेत्र व दूरी के अनुसार विभाजित करके वहां प्रश्नावलीयों के माध्यम से प्रश्न पूछे जाऐगे तथा निरिक्षण और निदर्शन के माध्यम से भी समको का संग्रहण किया जाना है।

शोध कार्य हेतु द्वीतियक समको के लिए समय समय पर ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा प्रकाशित लेखो व वार्षिक रीर्पोट, जिला सांख्यिकी विभाग के आंकडे आदि के द्वारा शोध कार्य किया जाना है।शोध कार्य की प्रविधियो के द्वारा आंकड़े एकत्रित कर उनका विश्लेषण कर उंन्हे प्रस्तुत करने व सिद्ध करने के लिए अनुमापन प्रविधियो व संख्यिकीक विधियों का प्रयोग किया जाना है।

—:अध्ययन का क्षेत्र:—

राजनांदगांव जिला में ग्रामीण विकास योजनाओं का क्रियान्वयन एक विश्लेषणात्मक

अध्ययन(स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना के सन्दर्भ) शोध विषय का अध्ययन क्षेत्र में राजनांदगांव जिले के सभी नौ जनपद पंचायतो को शामिल किया जाना है । । जिसके अन्तर्गत गांवो में निवास कर रहे ग्रामीण जो गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रहे परिवारो को इस योजना द्वारा लाभांवित होने पर शोध कार्य करना है।अध्ययन क्षेत्र का विभाजन ग्रामीणो की जाति ,शिक्षा , वैवाहिक स्थिति ,आयु ,व्यवसाय व भूस्वामित्व के आधार पर है।

—:प्रस्तावित कार्य का प्रस्तावित परिणाम:—

राजनांदगांव जिले में ग्रामीण विकास की दर पूर्व की तुलना में 50 प्रतिशत 60 प्रतिशत तक की है शासन द्वारा चलाये जा रहे ग्रामीण विकास योजनाओं से जिला निंरतर प्रगति कर रहा है । स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना क्रियान्वित होने से ग्रामीण जन सामान्य की आर्थिक स्थिति में सुदृढ़ता आयी है ग्रामीण विकास योजनाओं से ग्रामीण क्षेत्रों में पूर्व की तुलना में सुधार हुये हैं तथा ग्रामवासियों को उद्योग व्यवसाय या कलाकृति हेतु सहायता प्राप्त की है।

—:अध्याय संयोजनः—

अध्याय 1:—भूमिका

1:1 परिचय

1:2 अध्ययन के उद्देश्य

1:3 परिकल्पना

1:4 शोध प्रविधि

1:5 शोध साहित्य का पुनरावलोकन

1:6 अध्ययन का क्षेत्र

1:7 अध्ययन की सीमाये

अध्याय 2:—अध्ययन का भौगौलिक एंव आर्थिक परिचयः—

2:1 राजनांदगांव जिले का सामान्य भौगौलिक एंव प्रशासनिक परिचय

2:2 शासन द्वारा क्रियान्वित विभिन्न योजनाओ की संक्षिप्त जानकारी

2:3 स्वर्ण जयंति ग्राम स्वरोजगार योजना— अवधारणा एवं प्रगति

अध्याय 3:—राजनांदगांव जिले मे स्वर्ण जयंति ग्राम स्वरोजगार योजना की प्रगति का विश्लेषणात्मक अध्ययन

3:1 स्वरोजगारीयो की आर्थिक स्थिति का समंकीय विश्लेषण

3:2 रहन सहन की स्थिति में सुधार का समंकीय विश्लेषण

3:3 ग्रामिणो को प्राप्त रोजगार का समंकीय विश्लेषण

अध्याय 4:— राजनांदगांव जिले मे स्वर्ण जयंति ग्राम स्वरोजगार योजना के प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन

4:1 स्वरोजगारीयों पर प्रभाव

4:2 बैंकिग संस्थाओ पर प्रभाव

4:3 योजना का जिले आर्थिक उन्नति पर प्रभाव

अध्याय 5:—राजनांदगांव जिले मे स्वर्ण जयंति ग्राम स्वरोजगार योजना की समस्याये

5:1 स्वरोजगारीयों के लिए समस्या

5:2 बैंकिग संस्थाओ के लिए समस्या

5:3 योजना का जिले आर्थिक उन्नति के लिए समस्या

अध्याय 6:—निष्कर्ष एवं सूझाव

परिशिष्ट

प्रश्नावली

संदर्भ ग्रंथ सूची

शोध कार्य की प्रगति के साथ साथ अध्यायो के शीर्षको व उपशीर्षको में परिवर्तन होना सभंव है।

-:BIBLIOGRAPHY:-

- *A report on the success and failure of SHG's in india; implementsand paradigmof success.* 2008 by Planning commission, govt.of india new delhi
- Agnihotri Vivek k.; *Public policy analysis and design.*
- ANNUAL REPORT 2009 – 2010 Ministry of Rural Development;Govt ofIndia
- Book Principal & practices of Banking 2nd edition (2008) *Indian Institute of Banking & finance)* Page 191 to 200
- DR.NARENDRA P. SINGH & DR.B.P. SINHA PROJECT REPORT ON 15 JUNE 2007 *analysis that NABARD's supportive approach hasmade significant impact compared to SGSY scheme.*
- G. Bhaskara *Rao;Suggestions for Designing ofNational Rural Livelihood MissionA review of SGSY* 2009
- Laxmi Devi;1998 *Socio Economic Developmentof India* ,Anmol publication pvt ltd
- 11th5 year planning ;(2007-2012) ,10.09.2007

–:शोधकर्ता का प्रकाशनः–

शोधकर्ता के द्वारा दो पेपर पब्लिकेशन में प्रकाशन हेतु प्रेषित किये गये है परिणाम अपेक्षित है।

निर्देशक

डॉ. एल. एन. वर्मा

सहायक प्राध्यापक वाणिज्यविभाग

शा. जी . एन . ए . पी . जी. कॉलेज

भाटापारा (छ. ग.)

शोधकर्ता

शिल्पी यादव

पी. एच. डी. स्कालर वाणिज्य

दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर छ.ग

उपनिर्देशक

डॉ. एस . एस . खनुजा

प्राचार्य

दुर्गा महाविद्यालय , रायपुर (छ.ग.)